राख की पोटली

एक बार मीरी पीरी के शहनशाह श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने अपनी संगतों को आज्ञा दी कि अमृतसर में दिवाली का समागम बड़े जोश एवं उत्साह के साथ मनाया जायेगा। अतः सभी संगतों से अनुरोध है कि वे अधिक से अधिक संख्या में आकर दरबार की शोभा बढ़ाएँ। सभी के रहने व खाने पीने का प्रबन्ध किया जाएगा। दिवाली के अवसर पर दूर-दूर के शहरों और गाँवों से संगतें आने लगी। दिवाली वाले दिन गुरु महाराज जी दीवान हाल में अपने सिंहासन पर विराजमान थे। दूर-दूर से आई हुई संगतें बारी-बारी से आकर गुरु महाराज के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले रही थी। बहुत अधिक भीड़ देखकर गुरु दरबार के सेवादारों ने स्वयं ही संगतों को गुरु महाराज की सेवा में जाने से रोक दिया। दूर-दूर से दर्शनों के लिए आई हुई संगतों की व्याकुलता की कोई सीमा न रही। परन्तु उन्हें कोई रास्ता नहीं मिल रहा था कि वह महाराज के दर्शन कैसे कर सकें।

जब सुथरे शाह जी को पता चला कि उनके शहनशाह तक पहुँचने के लिए दूर-दूर से आई संगतें व्याकुल हो रही हैं तो उन्होंने तत्काल ही एक उपाय सोचा। उन्होंने एक चादर में राख बाँधी और उसके ऊपर एक फुलकारी (शानदार चादर) बाँध कर पोटली बना ली। उसे अपने सिर पर उठाकर गुरु हरगोबिन्द साहिब जी महाराज के चरणों के दर्शनों के लिए चल पड़े। जब यह श्री अकाल तख्त जी के सामने पहुँचे तो देखा कि वहाँ पर दर्शनार्थियों की बहुत भीड़ है जिन्हें वहाँ के सेवादार रोक रहे हैं। सुथरे शाह जी रेत की पोटली लेकर आगे बढ़े, सेवादारों ने इन्हें आगे जाने से रोका। सुथरे शाह जी ने कहा कि मैं संगतों में से भेंट इकट्ठी करके लाया हूँ और इसे गुरु महाराज जी के चरणों में अर्पित करनी है। जब यह मेरे गुरु महाराज जी के चरणों में अर्पित की जायेगी तो वह खुश होकर मुझे बहुत सा इनाम देंगे। इसलिए मुझे आगे जाने दीजिए।

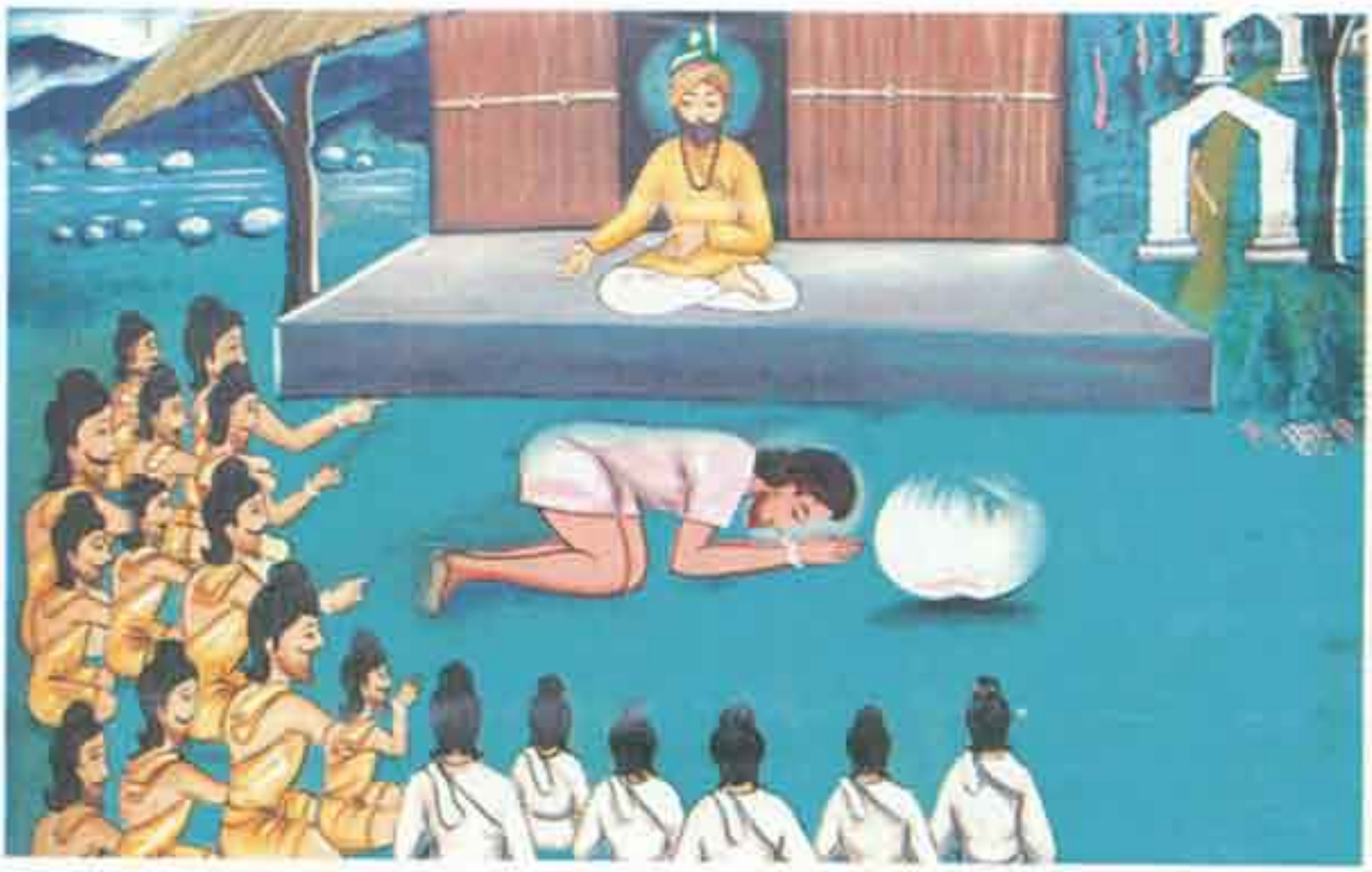

'सुथरे शाह जी' की बात सुनकर सेवादार के मन में लोभ आ गया और कहने लगे कि एक शर्त पर आगे जाने दे सकता हूँ कि आपको जो भी इनाम मिलेगा उसमें से आधा मुझे दिया जाए। सुथरे शाह जी ने कुछ सोच कर कहा कि ठीक है, जो भी इनाम मिलेगा उसका आधा तुम्हें अवश्य दिया जायेगा। इस तरह सेवादार ने सुथरे शाह जी से वचन लेकर उन्हें आगे जाने दिया। अभी १०-१२ कदम ही आगे बड़े होंगे कि दूसरे सेवादार ने रोक लिया। सुथरे शाह जी ने इस सेवादार को भी आधा इनाम देने का वचन दिया। इस तरह सुथरे शाह जी सात सेवादारों को आधे इनाम का लालच देते हुए आगे निकल गए।

श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी अकाल तख्त पर विराजमान थे। उनके आस पास ५-६ सेवादार और कुछ संगतें उनके दर्शनों के लिए खड़ी थी। 'सुथरे शाह जी' ने जाकर वह पोटली एक तरफ रख दी और उस पोटली के आगे हाथ जोड़कर उसको माथा टेकने लगे। सुथरे शाह जी को ऐसा करते देख सतगुरु जी समझ गए कि आज जरूर कुछ अनहोनी घटना घटी है नहीं तो मेरा यह लाडला इस तरह पोटली को नमस्कार क्यों करता?

शहनशाह सत्गुरु जी ने पूछा, 'सुथरे शाह' यह क्या कर रहा है? इस पोटली में क्या है जो इसके आगे बार-बार नमस्कार कर रहा है? महाराज के प्यार भरे वचन सुनकर सुथरे शाह जी कहने लगे - मेरे पातशाह! गुस्सा न करना, इस पोटली के कारण ही मैं आपके चरणों में पहुँच सका हूँ। अगर मैं आपका नाम लेता तो कोई भी मुझे यहाँ तक आने नहीं देता ।

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोबिन्द दियो मिलाए ।।

इसलिए मैं अपनी इस पोटली पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मेरे माता-पिता, मेरे सत्गुरु को मुझसे मिलवा दिया। सत्गुरु जी समझ गए कि संगतों को यहाँ आने नहीं दिया जा रहा है जो मेरे लाडले ने ऐसा किया है। फिर हँस कर पूछने लगे 'सुथरे' इस पोटली में क्या है जिसकी कृपा से तुम हम तक पहुँचे हो? 'राख है, इसमें और क्या होना है, लेकिन इसकी मेरे ऊपर बहुत कृपा है।' सुथरे शाह जी ने कहा। यह कहकर उन्होंने पोटली से फुलकारी उतारी और राख की पाटली खोल दी। मुट्ठी भरके राख को उड़ाने लगा और उसको माथा टेकने लगा। सत्गुरु ने एक सेवादार को बुलाया और आज्ञा दी कि सुथरे शाह को ऐसा करने से रोको और इसकी इस शरारत के एवज में १०० जूते मारो। यह सुनकर सुथरे शाह जी हाथ जोड़कर बड़ी विनम्रता से बोले 'ऐ मेरे सरताज, मुझ पर आपकी अपार कृपा है जो आपने इस दास को इस सेवा के बदले इनाम देने की आज्ञा दी है। इस इनाम में मेरे साथ कई हिस्सेदार है। मैं अकेला इस इनाम को लेकर उनसे धोखा नहीं करना चाहता। उनका हिस्सा पहले दिया जाए फिर जो शेष बचे उसे लेने का हकदार हूँगा।'

'इसका मतलब, इनाम कैसा? हमने तो १०० जूते मारने की आज्ञा दी है, इनाम तो कोई नहीं दिया जा रहा?' मन ही मन मुस्कुराते हुए सत्गुरु जी ने

कहा। 'जी हाँ महाराज, आपके पास से मुझे जो कुछ भी मिले मेरे धन्य भाग्य हैं। परन्तु इसमें मेरे कई हिस्सेदार हैं।' श्री सुथरे शाह जी ने विनती की कि महराज जो सेवादार संगत को यहाँ आने से रोक रहे थे, उसने इस दास को भी रोका, लेकिन मैंने वादा किया जो भी मुझे इनाम या प्रसाद मिलेगा उसका आधा पहले सेवादार भाई मंहगे को जरुर मिलेगा। इसलिए ५० जूते उसको मिलने ही चाहिए। बाकी आधे में से २५ का वादा दूसरे सेवादार से हुआ था, अतः २५ उसे दिए जाए। बाकि २५ में से आधे बेशक १३ तीसरे को मारे जाए बाकि १२ में से आधे बेशक चौथे, इसी तरह ६ में से आधे पांचवें को बेशक ३ में से २ छठे को और बाकी जो एक बचे वह सातवें को मारा जाए।

'आप अच्छी तरह जानते हैं कि मुझे तो कोई लालच है नहीं इसलिए मुझे इनाम लेकर क्या करना है? इसलिए मेरे शहनशाह जी मैं उनके साथ इनाम का वादा करके यहाँ पहुँचा हूँ। इनाम का वादा न करता तो यहाँ तक पहुँच ही नहीं सकता। अतः मैं बेईमान नहीं बनना चाहता। कृपा करके आप इनाम का बँटवारा इसी प्रकार से कर दो ताकि संगत को आपके दर्शन करने में आसानी हो सके।' मीरी पीरी के मालिक अपने लाडले के ये वचन सुनकर मुस्कुराए। उन्होंने सेवादारों को बुलाकर चेतावनी दी कि गुरु दरबार में आने से किसी को न रोका जाए। अपितु सभी को पंक्तिबद्ध करके यहाँ आने दिया जाए। गुरु महाराज की इस आज्ञा से सारी संगत प्रसन्न हो गई और उन्होंने अपने गुरु के दर्शन किए। सारी संगत 'सुथरे शाह जी' के इस परोपकर के लिए प्रशंसा करने लगी।